IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# पर्वतीय क्षेत्रों के सतत आर्थिक विकास में पर्यटन की भूमिका : जनपद चमोली के संदर्भ में एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

Deepak Kumar

Research Scholar Department of Economics,

S.S.J.U University, Almora Uttarakhand, India

**सारांश (Abstract)**

प्रस्तुत शोध पत्र उत्तराखंड राज्य के सीमांत जनपद चमोली के आर्थिक ढांचे में पर्यटन के महत्व और इसके सतत विकास (Sustainable Development) की संभावनाओं का विश्लेषण करता है। चमोली जनपद, जो अपनी अद्वितीय भौगोलिक स्थिति, समृद्ध जैव–विविधता और उच्च आध्यात्मिक महत्व (बद्रीनाथ, हेमकुण्ड साहिब) के लिए जाना जाता है, पर्यटन आधारित अर्थव्यवस्था का एक प्रमुख केंद्र है। शोध यह स्पष्ट करता है कि पर्यटन किस प्रकार स्थानीय निवासियों के लिए रोजगार सृजन, आय के स्रोतों में वृद्धि और पलायन (Migration) को रोकने में एक सशक्त माध्यम के रूप में कार्य कर रहा है। अध्ययन में इस बात पर बल दिया गया है कि सतत विकास के बिना पर्यटन अल्पकालिक लाभ तो दे सकता है, किंतु दीर्घकाल में यह नाजुक हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र के लिए हानिकारक हो सकता है। फूलों की घाटी और औली जैसे संवेदनशील क्षेत्रों में पारिस्थितिक पर्यटन (Ecotourism) के महत्व को रेखांकित किया गया है।शोध कार्य बुनियादी ढांचे (nfrastructure) की कमी, प्राकृतिक आपदाओं के प्रति संवेदनशीलता, मौसमी पर्यटन और अनियंत्रित निर्माण जैसी मुख्य बाधाओं की पहचान करता है।चमोली में सतत आर्थिक विकास के लिए उत्तरदायी पर्यटन (Responsible Tourism) की नीति अनिवार्य है। इसमें स्थानीय समुदाय की भागीदारी, पारंपरिक हस्तशिल्प का संवर्धन और पर्यावरण संरक्षण के साथ–साथ होमस्टे (Homestay) जैसी योजनाओं का विस्तार प्रभावी सिद्ध हो सकता है।

मुख्य शब्द (**Keyword**) : सतत विकास, चमोली जनपद, पर्वतीय अर्थव्यवस्था, पारिस्थितिक पर्यटन, रोजगार सृजन, हिमालयी पारिस्थितिकी।

प्रस्तावना

उत्तराखण्ड प्राकृतिक एवं धार्मिक पर्यटन स्थलों की दृश्टि से एक समृद्ध राज्य है, उत्तराखण्ड राज्य में पर्यटन आय का मुख्य साधन बताया गया है। राज्य सांख्यिकी डायरी 2018–19 के अनुसार यहाँ कुल 327 पर्यटन स्थल हैं इसके अलावा अनेक अन्य दर्शनीय स्थल भी हैं, पर्यटन को उत्तराखण्ड में रोजगार का मुख्य साधन भी बताया गया है।

उत्तराखण्ड देवों की भूमि के साथ ही साथ प्राकृतिक सौंर्दय आकर्शक बर्फ से ढकी पर्वत मालाऐं ताजी हवा, भुद्ध पानी और भक्ति की आस्था के साथ विभिन्न रूपों में भी जाना जाता है, और यहाँ की प्राकृतिक स्वरूप देश तथा विदेशी लोगों को अकर्शित करती है।प्रदेश में पर्यटन की अपार संभावनाऐं हैं युवा पीढ़ी इससे जुड़कर पर्यटन को और विकसित करने में लगी है।

राज्य का 70 प्रतिशत भू–भाग जंगलों से आच्छादित है जो कि हरियाली एंव पर्यावरण के प्रति महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। राज्य में लगभग सभी प्रकार क कृशि जलवायु क्षेत्र परंपरागत और उच्चमूल्य में कृशि उत्पादों के लिए वाशिवियक अवसर प्रदान करते हैं। भरपूर प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता से मैदानी इलाकों में औद्योगिक पोर्कों की स्थापना संभव ही पायी है, पर्यटन राज्य की अर्थव्यवस्था का निःसन्देह एक महत्वपूर्ण सेक्टर है, पर्यटन से राज्य में वर्श 2006–07 से 2016–17 तक कुल सकल राज्य घरेलू उत्पाद में न केवल 50ः योगदान है वरन पर्यटन से राज्य के सभी क्षेत्रों दूरस्थ क्षेत्रों सहित–सभी लोगों को आजीविका के अवसर प्राप्त हुए है। जैसे कि राज्य अपनी परिकल्पना को प्राप्त करने के लिए हरित अर्थव्यवस्था की ओर अग्रसर ही रहा है। पर्यटन क्षेत्र राज्य में सामाजिक एवं आर्थिक लक्ष्यों की साकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

उत्तराखण्ड में पर्यटकों की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है, वर्श 2006 में 19.45 लाख पर्यटन उत्तराखण्ड में आये जिनकी संख्या वर्श 2016–17 तक 31.78 लाख अंकित की गयी। राज्य में CAGR Compound Annual Growth Rate की दर 5.03 प्रतिशत दर्ज की गयी है। हाल ही में विश्व टूरिज्म एण्ड ट्रैवल कौन्सिल (WTTC) की रिपोर्ट में पूर्ण आकार के आधार पर भारत को वैश्विक स्तर पर 7वीं सबसे बड़ी पर्यटन अर्थव्यवस्था के रूप में उल्लिखित किया गया है।

उत्तराखण्ड पर्यटन विकास परिशद (यु0टी0डी0बी0) द्वारा प्रथम बार 2001 में राज्य की पर्यटन नीति बनायी गयी जिसका उद्देश्य अर्न्तराश्ट्रीय श्रेणी का आधार–भूत ढांचा स्थापित करना, निजी क्षेत्र की भागीदारी ढांचागत विकास में सुनिश्चित करना और नवीन पर्यटन गंतव्य स्थलों की पहचान करना था। यद्यपि हाल के वर्शों में पर्यटन के क्षेत्र में अत्यधिक बदलाव आयें हैं, जो कि मुख्यतः सूचना प्रौद्योगिकी की विकसित तकनीकी से पर्यटन क्षेत्र में परिवर्तित हुए हैं। इसके अतिरिक्त भारतीय अर्थव्यवस्था में लगातार वृद्धि से नये दौर के उधमियों के लिए अवसर पैदा हुए हैं, जो भारतीय अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाते हैं।

## समस्या का कथन (Statement Of The Problem)

देश की अर्थव्यवस्था में ग्रामीण पर्यटन की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है, पर्यटन द्वारा देश के अधिकांश व्यक्तियों की जीविका चलती है, लेकिन आज भी पर्यटन पर उतना ध्यान नहीं दिया जाता जितना देने की जरूरत है। पर्यटन से जहाँ लघु एवं कुटीर उद्योगों से

निर्मित वस्तुओं की मांग से सूक्ष्म उद्योगों को आगे आने का मौका मिलता है वहीं दूसरी ओर ये उद्योग लोगों को रोजगार उपलब्ध कराने में भी सहायक होते है, अतः सरकार द्वारा पर्यटन स्थलों में सस्ती वस्तुओं, सस्ती आवास व्यवस्था, सुव्यस्थित सड़कें एवं यातायात व्यवस्था उपलब्ध कराये ताकि पर्यटकों की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि हो सके, पर्यटन जनमानस के लिए वरदान है, जो उस क्षेत्र के जनमानस को वि□व के जनमानसों से रूबरू कराते हैं, आज वि□व के सभी दे□ाों में पर्यटन को अधिक महत्व दिया जा रहा है, ताकि विदे□ाी मुद्रा अर्जित की जा सके। अतः आव□यकता यह है कि उत्तराखण्ड के सभी जनपदों विकास खण्डों धार्मिक स्थलों, बुग्यालों को पर्यटन स्थलों के रूप में विकसित किया जाय जिससे समृद्ध राज्य की कल्पना साकार हो सके।

अध्ययन का उद्दे□य

इस भाोध अध्ययन का उद्दे□य चमोली क्षेत्र में ग्रामीण लोगों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति को जानना है। इस अध्ययन का मुख्य उद्दे□य यहाँ के पर्यटन में आने वाली समस्याओं को जानना है, प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र में पर्यटन से जुड़े परिवारों से सीधे बात करके प्र□नावली के द्वारा सीधे साक्षात्कार किया गया है। जिससे क्षेत्र में रहने वाले परिवारों की समस्याओं का अधिक अच्छा पता चल पाया है। ये इस क्षेत्र के लिए तथा भाासन व्यवस्था के लिए अति उपयोगी लघु□ाोध है।

1. स्थानीय लोगों को पर्यटन से प्राप्त होने वाली आय व रोजगार की स्थितियों का अध्ययन करना।
2. ग्रामीण क्षेत्र में अधिकतम् व्यक्तियों को रोजगार उपलब्ध कराने हेतु प्रयास करने के सुझाव एकत्र करना।
3. पर्यटन के द्वारा ग्रामीण क्षेत्र की अर्थव्यवस्था में सुधार हेतु प्रयास।

भाोध प्रविधि **(Research Methodology)**

भाोध कार्य के प्रारम्भिक चरण में पर्यटन से जुड़े क्षेत्रिय लोगों के विशय में उपलब्ध साहित्य का पर्यटन में काम कर रहे अध्ययन किया गया। उसके बाद भाोध कार्य के उद्दे□यों की प्राप्ति हेतु प्राथमिक स्रोतों से समंकों का संकलन किया गया। पर्यटन के क्षेत्र में कार्यरत लोगों की सामाजिक व आर्थिक स्थिति के विशय में जानकारी हेतु निर्द□ान प्रणाली के द्वारा पर्वतीय क्षेत्रों के सतत आर्थिक विकास में पर्यटन की भूमिका जनपद चमोली के संदर्भ में एक विश्लेषणात्मक अध्ययन चयन किया गया। न्याद□ा में सम्मिलित पर्यटन में कार्यरत लोगों से आव□यक सूचनाएं प्र□नावली/साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से अंकित की गयी।

पर्यटन क्षेत्रों की ऐतिहासिक पृश्ठभूमि एवं महत्व

प्राचीन समय से ही पर्यटन का अपना वि□ोश महत्व रहा है। मानव की जिज्ञासा ने उसे अन्य क्षेत्रों में भ्रमण हेतू प्रेरित किया है इसी जिज्ञासा और ललक ने उसको विभिन्न दे□ाों जानकारी के साथ–साथ उच्च मानसिक सोच विकसित कर वि□व जगत में उत्कृश्ट ज्ञान का भंडार अपने में समाहित कर आगे मानव समाज के लिए एक पथ प्रद□र्ाक का कार्य किया है। जहाँ उन्हें एक दूसरे की संस्कृति एवं भौगोलिक स्थिति का ज्ञान होता है, वहीं

नवीन सोच के साथ उनके मस्तिश्क में नये–नये विचार जो उन्हें मानव समाज के लिए कुछ नया करने की ओर प्रवृत्त करता है। पर्यटन से जहाँ प्राकृतिक वातावरण का आनन्द लिया जाता है वहीं नकारात्मक भावनाएं समाप्त होती हैं।

उत्तराखण्ड की आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एवं पौराणिक महत्ता की भांति ही यहां का इतिहास भी मानव सभ्यताओं के विकास का साक्षी है। प्रागैतिहासिक काल से ही इस भू–भाग में मानवीय क्रियाकलापों के प्रमाण मिलते हैं, सुविधाओं के साथ–साथ यह क्षेत्र आध्यात्मिक रूप से आर्य सभ्यता और संस्कृति का केन्द्र रहा है। मान्यता है कि पृथ्वी के जलप्लावन के प□चात जिस मनोरम स्थान पर सृश्टि की रचना हुई, वह स्थान उत्तराखण्ड में अलकापुरी के समीप ब्रह्मावर्त के अति निकट है। आदि–मानव ने यहीं मानव जीवन प्रारम्भ किया था। बद्रीनाथ के समीप गणे□ागुफा, नारदगुफा, मुचुकुन्दगुफा, व्यासगुफा तथा स्कंदगुफा है। य वे ही गुफायें हैं। जहाँ वेदों और पुराणों की रचना हुई है। ऋग्वेद (10–27–19) के अनुसार सप्त ऋशियों (मारीचि, अंगिरा, अत्रि, अगस्त्य, भृगु, व□िश्ठ और मनु) से अनेक वं□ा चले। पं0 हरिराम धस्माना ने अपनी पुस्तक 'सभ्य मानव का मूल स्थान' में मारीचि के वं□ाज मारोच्या (मारछा) बतायें हैं। मनु के विशय में यह वर्णन मिलता है। कि वे अपने माता विवस्वति, पिता वैवस्वत तथा पुत्र इक्ष्वाकु सहित जलप्लावन के बाद माना (माणा) आये। जिस भूमि में उन्होंने, उपनिवे□ाक स्वराज्य की वृद्धि की, उसको मनु के नाम से मानसखण्ड कहा जाने लगा। महाकवि कालिदास ने अपने महाकाव्य मेघदूत में इसी स्थल को अल्कापुरी के नाम सम्बोधित किया है। हिमालय की गगनचुंबी उच्चता, उसकी सनातन हिमरेखाओं की पवित्रता धाराओं की उत्ताल तरंगें, जलप्रपातों की भाोभा, भारतवासियों एवं विदे□ायों के हृदय में आद□ा एवं यथार्थता बसाने की अमोघ भाक्ति रखती है। इतना ही नहीं, इन हिम □ाखरों की गुफाओ, सरिताओं के तटों, देवदार के सघन वनों , बुग्यालों एवं हिम□ौलों पर बैठकर लोकहित तप□चर्या करके योगियों ने अध्यात्म बल का संचय किया था।

जनपद चमोली का संक्षिप्त आर्थिक विवरण

चमोली भारतीय राज्य उत्तराखण्ड का एक जिला है बर्फ से ढके पर्वतों के बीच स्थित यह जगह काफी खुब□ूरत है। चमोली अलकनंदा नदी के समीप बद्रीनाथ मार्ग पर स्थित है। यह उत्तराखण्ड राज्य का एक जिला है यह प्रमुख धार्मिक स्थलों में से एक है। यहाँ काफी संख्या में पर्यटक आते हैं। चमोली की प्राकृतिक सुंदरता पर्यटकों को अपनी ओर आकर्शित करती है। चमोली में ऐसे कई बड़े व छोटे मंदिर है तथा ऐसे कई स्थान है जो रहने की सुविधा प्रदान करते हैं।इस जगह को चाती कहा जाता है। चाती एक प्रकार की झोपड़ी है जो अलकनंदा नदी के तट पर स्थित है। चमोली मध्य हिमालय के बीच में स्थित है। अलकनंदा नदी यहाँ की प्रसिद्ध नदी है जो तिब्बत की जासकर श्रेणी से निकलती है। चमोली का क्षेत्रफल 8,030 वर्ग किमी है।

जनपद चमोली के प्रमुख पर्यटन स्थल :

जनपद चमोली में पर्यटन स्थलों की ख्याति राज्य ही नहीं अपितु दे□ा–विदे□ा तक या राश्ट्रीय एवं अन्तराश्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध है। जो निम्नलिखित प्रस्तुत किया जा रहा है–

- औली : हिमालय की पहाड़ियों में उत्तराखण्ड के चमोली जिले में औली स्कीइंग के लिए गंतव्य है। गढ़वाल में इसे औली बुग्याल अथवा घास के मैदान के नाम से जाना जाता है। यह समुद्रतल से 2500 मी0 से 3050 मी0 तक की ऊँचाई पर स्थित है।

जो□ीमठ से सड़क या रोपवे के माध्यम से औली तक पहुंचा जा सकता है। सामान्यतः जनवरी से मार्च तक औली के ढलानों पर लगभग 3 मी0 गहरी बर्फ की चादर बिछी होती है। स्कीइंग के लिए औली 500 मी0 के ढलान के साथ 3 किमी0 विस्तार वाला मैदान अन्तर्राश्ट्रीय मानक के अनुसार एक बहुत अच्छा माना जाता है। औली दे□ा का तीसरा नया स्कीइंग स्थल है। यहाँ गुरसों बुग्याल, छत्ता कुंड, सेलधार तपोवन 3 किमी0 तथा कंवारी बुग्याल 15 किमी0 आस पास के द□ानीय स्थल है। गुरसों बुग्याल फूलों से भरा एक ढलवाँ मैदान है। छत्ता कुंड मीठे पानी का सरोवर है सेलधार तपोवन में गर्म पानी के प्राकृतिक स्रोत फव्वारे व कुंड है यहाँ का तापमान गर्मियों में अधिकतम 13 डिग्री से और सर्दियों में न्यूनतम 0 डिग्री से0 होता है। हालांकि औली में स्कीइंग मुख्य आकर्शण का केन्द्र है परन्तु इसके अलावा भी केवल कार सवारी तथा रोप लिफ्ट या अन्य आउटडोर खेल जैसे स्नोमैन बनाना या स्नोबॉल लड़ाई भी आकर्शण के केन्द्र हैं।

➢ योगध्यान बद्री :

योगध्यान बद्री मंदिर, बद्रीनाथ के मंदिर के समान पुराना हैं यह पांडुके□वर जो□ीमठ से 24 किमी0 दूर है। योगध्यान मंदिर पाँच बद्री में से एक है, यह ध्यानपूर्वक मुद्रा में बद्रीनाथ की पूजा की जाती है। पौराणिक कथा के अनुसार, पांडवों ने हस्तिनापुर का राजा परीक्षित को बनाया और यहाँ सेवानिवृत हुए। इसके अलावा राजा पांडु, पांडवों के पिता ने अपने आखिरी दिनों में अपने निर्वाण से पहले यहाँ तपस्या की थी। मिलाम ग्लेि□ायर की चोटी पर स्थित सुर्याकुंड एक गर्म पानी का कुंड है कहा जाता है कि कुती ने सूर्य के पुत्र कर्ण को यही जन्म दिया था। श्री बद्रीनाथ के पास पांडुके□वर में पांडु ने कुन्ती से भाादी की थी।

➢ रूद्रनाथ मंदिर :

रूद्रनाथ मंदिर भारत के उत्तराखण्ड राज्य चमोली में स्थित भगवान □िाव का एक मंदिर है। जो कि पंचकेदार में से एक है। समुद्रतल से 2290 मी0 की ऊँचाई पर स्थित रूद्रनाथ मंदिर भव्य प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण है। रूद्रनाथ मंदिर में भगवान भांकर के एकानन यानि मुख की पूजा की जाती है। जबकि सम्पूर्ण भारीर की पूजा नेपाल की राजधानी काठमाण्डू में प□ुपतिनाथ में की जाती है। रूद्रनाथ मंदिर के सामने से दिखाई देती नन्दा देवी और त्रि□ूल की हिमाच्छादित चोटियाँ यहा का आकर्शण बढ़ाती है।

➢ आदिबद्री :

आदिबद्री जो कि हेलिसरा के रूप में राजस्व रिकॉर्ड में भी जाना जाता है सुंदर परिवे□ा में स्थापित है और लोहबा से आदिबद्री तक की सड़क सुंदर इलाके से गुजरती है। आदिबद्री के ठीक ऊपर एक झील बेनीताल स्थित हैं आदिबद्री में सोलह मंदिरों के अव□ोश हैं जो द्वाराहट जिला अल्मोड़ा के समान हैं यहाँ बद्री नारायण को समर्पित एक मंदिर को पूजा के लिए अभी भी प्रयोग किया जाता हैं। स्थानीय लोगों का एक अंधवि□वास है कि कुछ वर्शों प□चात् जो□ीमठ से बद्रीनाथ की सड़क मंदिर के पास पहाड़ी मिलने से बंद हो जाएँगी और तब यह मंदिर तीर्थ यात्रा का स्थल बन जाएगा। यहाँ 16 छोटे मंदिर बचे है जिनमें से 7 पुराने गुप्तकाल के समतल छतों के साथ अधिक प्राचीन है। स्थानीय परम्परा के अनुसार मंदिर का निर्माण कार्य भांकराचार्य ने किया जो आठवीं भाताब्दी के सुधारक तथा तथा दा□ानिक थे सभी मंदिरों को एक छोटी सी जगह 12.5 मी0 से 25 मी0 में बनाया गया है।

तथा इनकी ऊँचाई 2 से 6 मीटर तक भिन्न है। नारायण का मुख्य मंदिर सामने में एक ऊँचा मंच द्वारा प्रतिश्ठित है तथा छत पिरामिड रूप के छोटे घेरे के रूप में जहाँ मूर्ति निहित है विश्णु की मूर्ति काले पत्थर से बनी हुई एक मीटर ऊँचो है। विश्णु निश्चित रूप से बद्रीनाथ का एक और नाम है इसलिए इस मंदिर को आदिबद्री भी कहा जाता है।

➢ भविश्यबद्री :

भविश्य के बद्रीनाथ भविश्य बद्री का मंदिर उपन में है जो जोशीमठ से लगभग 17 किमी0 दूर पूर्व में लता की ओर है। यह तपोवन से दूसरी तरफ है तथा धालीगंगा नदी के ऊपर और लगभग 3 किमी0 का ट्रेक द्वारा यहाँ पहुंचा जा सकता है। मोटर सड़क से इसकी ऊँचाई 2744 मी0 है। यह घने जंगलों के बीच स्थित है। यहाँ पहुंचने के लिए धौली नदी के किनारे का रास्ता काफी कठिन है धौलीगंगा का अर्थ होता है और वास्तव में यह लगभग हर जगह तेज धारा के साथ तपोवन से ऊपर की तरफ से दोनों ओर लगभग सीधा चट्टानों के मध्य से तेजी से गुजरती है।

ऐसा माना जाता है कि कलयुग की भाुरूआत में जोशीमठ नरसिंह की मूर्ति का कभी न नश्ट होने वाला हाथ अंततः गिर जाएगा तथा विश्णुप्रयाग के पास पतमिला में जय और विजय के पहाड़ गिर जाऐंगे जिस कारण बद्रीनाथ धाम में जाने का मार्ग बहुत ही दुर्गम हो जाएगा जिसके परिणामस्वरूप बद्रीनाथ का फिर से प्रत्यावर्तन होगा और भविश्य बद्री में बद्रीनाथ की पूजा की जाएगी विश्णु के अवतार कल्की कलयुग को समाप्त करेंगे तथा पुनः सतयुग की भाुरूआत होगी इस समय बद्रीनाथ धाम को भविश्यबद्री में पुर्नस्थापित किया जाएगा।

➢ गोपेश्वर :

1308 मी0 की ऊँचाई पर स्थित सुन्दर पर्वत श्रृंखलाओं, सीढ़ीदार खेतों तथा छोटे झीलों से घिरा खूबसूरत गोपेश्वर नगर चमोली जिला का मुख्यालय है भगवान शिव का एक प्राचीन मंदिर भाहर का मुख्य आकर्शण है और हजारों तीर्थ यात्री पूरे वर्शभर इस मंदिर के दर्शन को आते हैं। अपनी प्राकृतिक सुंदरता तथा ताजे और भाांत वातावरण के कारण गोपेश्वर पर्यटकों के लिए एक प्रमुख आकर्शण का केन्द्र रहा है। इस नगर के आस पास कइ प्रसिद्ध पयर्टन स्थल और धार्मिक केन्द्र अवस्थित है इतिहासकारों के अनुसार गोपेश्वर का नाम भगवान कृश्ण के नाम से जुड़ा है। भगवान शिव के प्राचीन मंदिर के अलावा वैतरणी कुंड बिना प्रतिमाओं के मंदिर समूह तथा बांज के वृक्ष अन्य दर्शनीय है। जौली ग्रांट एयरपोर्ट से 225 किमी0 की दूरी पर स्थित गोपेश्वर का निकटतम हवाई अड्डा है। गोपेश्वर अच्छी तरह से जॉलीग्रांट हवाई अड्डे के साथ मोटर सड़कों से जुड़ा हुआ है। एन0एच0 58 पर गोपेश्वर से 205 किमी0 दूर ऋशिकेश स्थित है।

➢ ग्वालदम

1960 मी0 की ऊँचाई वाला यह स्थल प्राकृतिक का सौन्दर्य के लिए प्रसिद्ध है। इस नगर से नंदाघुंघटी 6309 मी0, त्रि□ूल 7120 मी0, नंदादेवी 7817 मी0 तथा चौखंबा 7838 मी0 चोटियों के मनोरम दृ□य दिखाई देती है। ग्वालदम साहसिक पर्यटन स्थल रूपकुंड ट्रेकिंग का पहला पड़ाव हैं यहाँ का बौद्ध मठ भी द□र्नीय है। यह केवल सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ है। यहाँ पर पर्यटक आवास गृह तथा वन विश्राम गृह में सस्ती दर पर ठहरने की सुविधा हैं। मई–जून तथा सितम्बर–अक्टूबर के महीने यहाँ भ्रमण के लिए उत्तम है। सर्दियों में यहाँ भीशण भीत और हिमपात होता है।

➢ फूलों की घाटी राश्ट्रीय उद्यान :

यह राश्ट्रीय उद्यान चमोली जिले के भ्यूंडार गंगा के ऊपरी भाग पर स्थित है। इसकी स्थापना 1982 में की गई थी यह बद्रीनाथ से 40 किमी0 दूर है। इस घाटी का पता प्रसिद्ध पर्वतारोही फैकस्मिथ ने 1931 में लगाया था और उन्होनें ही इस बगीचे का नाम फूलों की घाटी रखा था। यहाँ तरह तरह के फूल खिलते हैं और यहाँ विभिन्न प्रकार की वनस्पतियाँ भी पाई जाती है। यहाँ पर कस्तूरी मृग, काले भालू, भरल, सेरॉंव, भूरे भालू, थार आदि पाए जाते हैं। यहाँ जाने का उपयुक्त समय मध्य जुलाई से मध्य अगस्त तक का है। घाटी की वनस्पति विविधता के संरक्षण के उद्दे□य से सरकार ने वर्श 1982 में इसे राश्ट्रीय पार्क घोशित किया। 1988 में युनिस्कों ने इसे वि□व विरासत की श्रेणी में भाामिल कर लिया।

➢ हेमकुंड साहिब :

समुद्रतल से 15000 फुट से ऊपर की ऊँचाई पर स्थित श्री हेमकुंड साहिब सिख तीर्थ यात्रा के एक लोकप्रिय केन्द्र के रूप में ऊभरी है, जहाँ हर साल गर्मियों में हजारों भक्त घूमने आते हैं। हेमकुंड में अक्टूबर से अप्रैल तक बर्फ की वजह से जाना अत्यधिक दुर्गम है।

➢ बद्रीनाथ :

भारत के प्रसिद्ध चार धामों में बद्रीनाथ भगवान विश्णु का निवास स्थान सुप्रसिद्ध है। बद्रीनाथ धाम ऐसा धार्मिक स्थान है जहाँ नर और नारायण दोनों मिलते हैं। धर्म□ास्त्रों की मान्यता के अनुसार इसे वि□ालपुरी भी कहा जाता है। और बद्रीनाथ धाम में ही भगवान विश्णु की पूजा होती है। इसलिए इसे विश्णु धाम भी कहा जाता है। यह हिमालय के सबसे पुराने तीर्थों में स एक है। यहाँ भगवान विश्णु पद्मासन की मुद्रा में विराजमान हैं।

➢ वसुधारा जलप्रपात :

जलप्रपात हमे□ा से मानव कल्पना को आकर्शित करते रहे हैं माणा गाँव से 5 किमी0 दूरी पर प□िचम में स्थित वसुधारा हिमाच्छादित चोटियों, ग्ले□ियरों और ऊँची चट्टानों से घिरा 145 मी0 ऊँचा झरना है। प्रचंड हवा कभी कभी सम्पूर्ण जलप्रपात की मात्रा बिखेर देती है। जैसे झरना एक या दो मिनट के लिए रूक गया हो जिससे स्थानीय लोगों के मन में अंधवि□वासी विचार उत्पन्न होते हैं।

जनपद चमोली के आर्थिक विवरण के अन्तर्गत हम यहाँ की कुल कार्य□ील जनसंख्या, प्रमुख फसलें एवं पर्यटन से सम्बन्धित सुविधायें, पर्यटकों की संख्या यहाँ पायी जाने वाली खनिज तत्वों का अध्ययन करेंगे।

### पर्यटन से मासिक आय का विवरण

अध्ययन क्षेत्र में सर्वेक्षित व्यक्तियों की मासिक आय प्राप्त होने का विवरण तालिका के माध्यम से स्पश्ट किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र में पर्यटन से मासिक आय का विवरण

| क्र. सं. | पर्यटन से आय | जनपद चमोली | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | | कर्णप्रयाग | द□ौली | कुल | प्रति□ात |
| 1 | 0– 5000 | 4 | 4 | 8 | 13.33 |
| 2 | 5000–10000 | 8 | 10 | 18 | 30.00 |
| 3 | 10000–15000 | 7 | 6 | 13 | 21.76 |
| 4 | 15000–20000 | 6 | 5 | 11 | 18.33 |
| 5 | 20000–25000 | 5 | 5 | 10 | 16.58 |
| योग | 30 | 30 | 30 | 60 | 100.0 |

स्रोतः प्राथमिक सर्वेक्षण के आधार पर

उपरोक्त तालिका से स्पश्ट हैं कि न्याद□ा क्षेत्र में सबसे अधिक 30.0 प्रति□ात कार्मिकों की आय 5000 से 10000के मध्य हैं तथा सबसे कम 13.33 प्रति□ात की आय 5000 सेकम है।

औसत आय का विवरण

| क्र.सं. | वर्गान्तर | संख्या पि | मध्यमान गप | थ्पगप |
|---|---|---|---|---|
| 01 | 0– 5000 | 8 | 2500 | 20000 |
| 02 | 5000–10000 | 18 | 5000 | 90000 |
| 03 | 10000–15000 | 13 | 10000 | 130000 |
| 04 | 15000–20000 | 11 | 15000 | 165000 |
| 05 | 20000–25000 | 10 | 20000 | 200000 |
| | | 60 | | 605000 |

स्रोतः प्राथमिक सर्वेक्षण के आधार पर

सूत्र औसत आय त्र $\sum FiXi/\sum Fi$

= 605000/60

= 10083रु.

गणना से स्पश्ट है कि श्रमिकों की औसत आय 10083रूपयेहै।

न्याद�र्ा क्षेत्र में उत्तरदाताओं को पर्यटन से महीने में रोजगार का विवरण

| क्र.सं. | वर्ग अन्तराल (दिनों में) | जनपद चमोली | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | | कर्णप्रयाग | द�ाौली | कुल | प्रति�ात |
| 1 | 10—15 | 5 | 7 | 12 | 20 |
| 2 | 15—20 | 6 | 8 | 14 | 23.33 |
| 3 | 20—25 | 11 | 9 | 20 | 33.34 |
| 4 | 25—30 | 8 | 6 | 14 | 23.34 |
| योग | | 30 | 30 | 60 | 100.0 |

स्रोतः प्राथमिक सर्वेक्षण के आधार पर

उपरोक्त तालिका से स्पश्ट होता है कि जनपद चमोली न्याद�र्ा क्षेत्र में लिये गये विकासखण्डों कर्णप्रयाग एवं द�ाौली में चयनित 60 परिवारों में से 10—15 दिन रोजगार प्राप्त व्यक्तियों का कुल प्रति�ात 20 है, जबकि 15—20 दिन रोजगार प्राप्त करने वाले व्यक्तियों का प्रति�ात 23.33 है, तथा 20—25 दिन रोजगार प्राप्त करने का प्रति�ात 33.34 है तथा 25—30 दिन रोजगार प्राप्त करने का प्रति�ात 23.34 है व 10—15 दिन रोजगार प्राप्त करने का प्रति�ात 20 है जो कम है।

अध्ययन क्षेत्र में पर्यटन से स्थानीय लोगों को रोजगार प्राप्त होने की संभावनाओं का विवरण

| क्र.सं. | अभिवृत्ति | जनपद चमोली | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | | कर्णप्रयाग | द�ाौली | कुल | प्रति�ात |
| 1 | हाँ | 22 | 24 | 46 | 77 |
| 2 | नहीं | 8 | 6 | 14 | 23 |
| योग | | 30 | 30 | 60 | 100 |

स्रोतः प्राथमिक सर्वेक्षण के आधार पर

उपरोक्त तालिका से स्पश्ट होता है कि जनपद चमोली न्याद�र्ा क्षेत्र में लिये गये विकासखण्डों कर्णप्रयाग एवं द�ाौली में पर्यटन से स्थानीय लोगों को रोजगार प्राप्त होने की संभावनाये 77 प्रति�ात है। तथा नही का प्रति�ात 23 है।

पर्यटन से सम्बन्धित समस्यायें

न्याद�र्ा क्षेत्र में बहुत सारी पर्यटन से सम्बन्धित समस्यायें देखने को मिली जो वहाँ पर साक्षात्कार के दौरान उत्तरदाताओं ने बातयी, जिसमें से प्रमुख समस्याओं को निम्नवत् दिया जा रहा है।

- अध्ययन क्षेत्र में पर्यटन से वर्श भर में रोजगार उपलब्ध नहीं हो पाता है। जिसके कारण व अन्य कार्य में संलग्न रहते हैं।

- अध्ययन क्षेत्र में पाया गया कि पर्यटन में कार्य करने वाले व्यक्तियोंको आधुनिक सेवायें उपलब्ध नहीं हो पा रही हैं। जिससे पर्यटन प्रभावित हो रहा है।

- अध्ययन क्षेत्र में संचार की उचित व्यवस्था न होने के कारण तीर्थयात्रियों को अधिक से अधिक कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा है। जिससे पर्यटकों की संख्या में गिरावट आयी, इस प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए आवयक है कि संचार सेवाओं को ठीक रखा जाय। इसके लिए नेटर्वक कम्पनियों को निरन्तर बाधा रहित सेवाओं के लिए प्रोत्साहन किया जाय।

- अध्ययन क्षेत्र में पर्यटन से आय व रोजगार की अपार संभावनायें हैं लेकिन जागरूकता के अभाव के कारण ग्रामीण लोग आज भी लाभान्वित नहीं हो पा रहे हैं।

## निश्कर्श एंव सुझाव

स्थानीय ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यटन के क्षेत्रों में रोजगार की अपार सम्भावनायें आज भी मौजूद है। यहाँ की हर वस्तु पर्यटकों को अपनी ओर आकर्शित करती है। स्थानीय ग्रामीण पर्यटन क्षेत्र में अधिकतम व्यक्त्यिों को रोजगार उपलब्ध कराने में सक्षम हैं। यहाँ के स्थानीय ग्रामीण पर्यटन व धार्मिक स्थलों को विकसित एव प्रचार प्रसार किया जाय जिससे पर्यटकों को ग्रामीण क्षेत्रों के पर्यटन एवं धार्मिक स्थलों का पता चल पाये और अधिक से अधिक संख्या में पर्यटक यहाँ घूमने के लिए आ सकें। यहाँ के प्रत्येक क्षेत्र व जनपद को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जाय। यहाँ के पहाड़ों पर्वतों, वादियों, बुग्यालों, तालों, झीलों, हिल स्टोनों को विकसित किया जाय। स्थानीय क्षेत्रों में संचार सुविधायें, यातायात सुविधायें, रहने खाने की सुविधायें को बढ़ाया जाय। यहाँ की धरोहर एवं पर्यावरण सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए पर्यटन स्थलों में कूड़े कचरे का निस्तारण व्यापक स्तर पर किया जाय। इस हतु कानूनी प्रावधानों का अनुपालन कठोरता से किया जाना आवयक है। इन प्राकृतिक स्थलों पर पर्यावरण को नुकसान पहुँचाने वाले पदार्थों का उपयोग न किया जाय स्वच्छ पर्यावरण एवं स्वच्छ वातावरण में पर्यटन को विकसित किया जाय भौक्षिक पर्यटन के साथ–साथ आर्थिक पर्यटन को भी बढ़ावा दिया जाय।

## संदर्भ सूची

1.त्रिपाठी के□ारी नन्दन, आलोक (2014–15),उत्तराखण्ड एक समग्र अध्ययन बैद्धिक प्रका□ान इलाहाबाद, पृ.सं. 192

2.रतूडी हरिकृश्ण (2020), गढ़वाल का इतिहास,पृ.सं. 21–25

3.मैठानी डी0डी0 (2015),उत्तराखण्ड का भूगोल, भारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद पृ.सं. 91

4.खत्री हरी□ा कुमार, पर्यटन भूगोल (2013), कैला□ा पुस्तक सदन भोपाल पृ.सं. 5

5.रतूडीहरिकृश्ण (2020), गढ़वाल का इतिहास, भागीरथी प्रका□ान, टिहरी गढ़वाल उत्तराखण्डपृ.सं. 18

6.बलोदी राजेन्द्र प्रसाद (2015), उत्तरखण्ड समग्र ज्ञानकोश, बिनसर पब्लि□िांग,पृ.सं. 33

7.जो□ाी धन□याम (2017), उत्तराखण्ड का राजनीतिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास,प्रका□ा बुक डिपो बरेली, पृ.सं. 33

8.बलोदी राजेन्द्र प्रसाद (2015),उत्तराखण्ड समग्र ज्ञानको□ा बिनसर पब्लि□िांग देहरादून पृ.सं. 35

9.जनगणना 2011, पृ.सं. 22

10. उत्तराखण्ड एक दृश्टि (2019–20.),एयर बुक, पृ.सं. 15 बलोदी राजेन्द्र, उत्तराखण्ड समग्र ज्ञानको□ा विनसन पब्लिके□ान देहरादून